क्रियात्मक शोध एवं चिन्तनशील अभ्यास

स्नेहा टाइटस तथा इन्दुमती एस.

किसी भी अन्य क्षेत्र की तरह अध्यापन कला की भी अपनी एक 'पॉप' या लोकप्रिय शब्दावली होती है और 2013 की विशिष्टता थी 'क्रियात्मक शोध'। हमने वीडियो के जिस सेट की समीक्षा की वह उस परियोजना का हिस्सा है जो दिनेशपुर, उत्तराखण्ड, भारत के एक स्कूल में शिक्षकों के कार्य पर आधारित थी और जिसे वर्ष 2013 में अगस्त और दिसम्बर के बीच संचालित किया गया। आठ शिक्षकों और उनके प्रधानाध्यापक ने यह निर्णय लिया कि वे कक्षा में जिन समस्याओं का सामना करते हैं, उनके बारे में क्रियात्मक शोध करेंगे - इस प्रक्रिया में अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के कुछ सदस्यों ने मदद की। इस अध्ययन का नेतृत्व डॉ. नीरजा राघवन ने किया और उनका काम उनकी पुस्तक 'द रिफ्लेक्टिव टीचर' में निरूपित किया गया है। इस पुस्तक में उन केस स्टडीज का प्रयोग किया गया है जो 'इमर्जेंस ऑफ द रिफ्लेक्टिव प्रेक्टिशनर फ्रॉम विदिन द इन-सर्विस टीचर' शीर्षक वीडियो फिल्म में समाहित हैं।

कितना विचारोत्तेजक शीर्षक है! 'इमर्जेंस ऑफ द रिफ्लेक्टिव प्रेक्टिशनर फ्रॉम विदिन द इन-सर्विस टीचर' अर्थात सेवारत शिक्षक के भीतर से चिन्तनशील अभ्यासी का उदय। इस शीर्षक से मन में एक क्रिस्लिस (कोष में बन्द कीट) का विचार आता है -यानी एक ऐसी क्षमता जो प्रत्येक सेवारत शिक्षकों के भीतर होती है। और वास्तव में यही वजह है कि इस अध्ययन में शिक्षकों के कार्य का प्रदर्शन करने वाली ये लघु फिल्में असाधारण बन जाती हैं। यहाँ हम अध्यापकों का एक ऐसा समूह देखते हैं जो ऐसी समस्याओं के साथ जूझ रहा है जिसका सामना देश का हर शिक्षक करता है अर्थात ऐसे विद्यार्थियों जिन्हें बुनियादी अवधारणाएँ सीखने में दिक्कत पेश आती है और जिनमें साक्षरता और संख्यात्मक कौशल का अभाव है, प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थी, अनियमित उपस्थिति और घर के वातावरण से समर्थन की कमी.. यह सूची अन्तहीन है! इसके साथ में शिक्षकों पर पाठ्यक्रम 'पूरा' करने का दबाव, कक्षा में विभिन्न स्तरों वाले विद्यार्थियों को सम्भालना, ऐसे विद्यार्थियों को भी जो कक्षा के बाकी विद्यार्थियों के समान भाषा नहीं बोलते...इस प्रकार की कई समस्याएँ भी हैं तो ऐसे परिदृश्यों से भला क्या उभरकर सामने आ सकता है?

फिर भी यह देखकर बड़ा आश्चर्य होता है कि शिक्षक समस्याओं को पहचानते हैं और उनसे निपटने के लिए नवीन किन्तु सरल

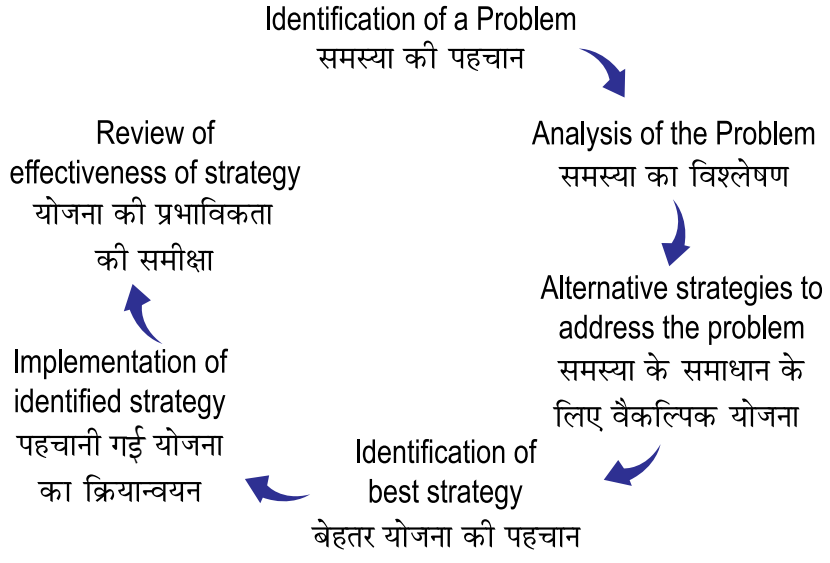

यदि नहीं, तो शोध टीम ने शिक्षकों को फिर से ए.आर. चक्र शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया।

योजनाएँ अपनाते हैं। यह बात अपने आप में असामान्य नहीं है। दुनिया भर में शिक्षक दिन-प्रतिदिन ऐसा करते ही रहते हैं। जैसा कि वीडियो में एक शिक्षक कहते हैं कि अपने कार्य को अंजाम देने के लिए हम जो कुछ करते हैं उसे 'क्रियात्मक शोध' का नाम देने की आवश्यकता नहीं है। फर्क पड़ता है उस चक्र से जिसमें से शिक्षक इस परियोजना के दौरान गुजरे।

दस्तावेजीकरण इस प्रक्रिया का अनिवार्य हिस्सा था जिसे शिक्षकों ने लगभग सर्वसम्मति से लगभग अस्वीकार कर दिया था। लेकिन साथ ही वे इस बात पर भी सहमत हुए कि यह बहुत महत्वपूर्ण कारक है जिसकी वजह से वे उन योजनाओं पर चिन्तन कर पाए जिन्हें उन्होंने अपनाया था। उनमें से कुछ तो मानदण्ड की तलाश में भी लग गए कि दस्तावेजीकरण का 'सही' तरीका क्या है। अन्त में उन सभी को एहसास हुआ कि चिन्तन करना मुख्य बात थी, दस्तावेजीकरण नहीं।

निम्नलिखित भाग में शिक्षकों द्वारा किए गए क्रियात्मक शोध की पहल का वर्णन किया गया है।

(क) अँग्रेजी शब्दावली और पढ़ने की क्षमता का संवर्धन : शिप्रा अग्रवाल

शिप्रा अग्रवाल करीब 17 वर्षों से स्कूल के बच्चों को पढ़ाती आ रही थीं और इस दौरान कक्षा में अन्तःक्रिया के लिए पाठ्यपुस्तकें ही उनका मार्गदर्शन करती थीं । कई अन्य शिक्षक भी तो पाठ्यपुस्तकों को ही मार्गदर्शक मानते हैं। लेकिन एक समय ऐसा आया जब उन्हें लगने लगा कि वे जो विषय पढ़ाती हैं उसमें विद्यार्थियों को और बेहतर बनाएँ। वे चाहती थीं कि विद्यार्थी उस विषय को सीखें और वे यह भी चाहती थीं कि विद्यार्थी यह सीखें कि उस विषय को कैसे सीखना चाहिए! क्रियात्मक शोध परियोजना के तहत उन्होंने चौथी कक्षा के बच्चों की अँग्रेजी शब्दावली का संवर्धन करने का निर्णय लिया ताकि वे शब्दों को पहचानने के साथ-साथ उनका अर्थ भी समझें। कुछ पाठों को पढ़ाने के बाद जब उन्होंने शुरुआती आकलन किया तो उन्हें लगा कि बच्चों को बोलने, पढ़ने और लिखने में मुश्किल होती है। इनमें से उन्होंने पढ़ने को चुना और बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ाने पर ध्यान केन्द्रित किया। उन्होंने नई-नई योजनाएँ अपनाईं जैसे कि दृश्य संकेत, साथियों की सहायता और भाषा-आधारित खेल। फिर धीरे-धीरे वे बच्चों को मदद व समर्थन देना कम करती गईं और उन्हें पढ़ने के कौशल में अधिक आत्मविश्वासी और स्वतंत्र बना पाईं। एक महीने तक ऐसा करने के बाद बच्चों की शब्द पढ़ने की क्षमता तकरीबन छह गुना बढ़ गई।

वीडियो देखते समय हम इस तथ्य से प्रभावित हुए कि क्रियात्मक शोध कार्यक्रम की अनिवार्यता के कारण शिप्रा का अवलोकन कौशल तेज हुआ था। यह बात स्पष्ट रूप से नजर आ रही थी कि उन्होंने विद्यार्थियों के विषय-ज्ञान और कौशल की कमियों का पता लगाया है। उन्होंने जो योजनाएँ अपनाईं वे सरल और करने में आसान थीं और सबसे बड़ी बात यह कि वे समस्या के मूल तक पहुँचती थीं - किसी भी शिक्षक के लिए यह बात प्रेरणादायी हो सकती है कि वे भी इस तरह के नवाचारों का प्रयोग करें। शिक्षकों को यह बात भी प्रोत्साहित करेगी कि शिप्रा का काम भले ही बढ़ा हो लेकिन वे कक्षा में विभिन्न स्तर वाले विद्यार्थियों के लिए अध्यापन के अलग-अलग तरीकों का प्रयोग करने में सक्षम रहीं। इसके अलावा उन्होंने जो कुछ सीखा उसका एक व्यावहारिक तरीके से दस्तावेजीकरण किया, जिसके कारण वे अपना काम बढ़ाए बिना ही चिन्तन करने और सीखने में सक्षम हुईं।

(ख) हर बच्चा अवलोकन करता है : मोहित शर्मा

मोहित शर्मा पर्यावरण अध्ययन पढ़ाते हैं और उन्होंने कुछ ऐसे बच्चों का पता लगाया जो हिन्दी में पढ़ और लिख नहीं सकते थे। मोहित बच्चों में आत्मविश्वास जगाना चाहते थे ताकि वे पर्यावरण अध्ययन सीखने में रुचि ले सकें।

उन्होंने ऐसी योजनाओं का विकास किया जिनमें ये बच्चे अवलोकन करके आरेख/चित्रों के माध्यम से अपने अधिगम और अपनी समझ को प्रस्तुत कर सकें। उन्होंने बच्चों से जानवरों के चित्र बनवाए और उनका मिलान उनके आवासों से करवाया। उन्होंने कुछ ऐसी गतिविधियाँ अपनाईं जिनकी सहायता से विद्यार्थी चित्र बनाकर अपने विचार प्रस्तुत कर सकें। उन्होंने ये गतिविधियाँ प्रत्येक विद्यार्थी के साथ कीं, लेकिन पाँच विद्यार्थियों और उनके अधिगम का अवलोकन तथा दस्तावेजीकरण किया।

मोहित ने पाया इन बच्चों ने भी अन्य विद्यार्थियों की तरह से ही सीखा है लेकिन केवल जवाब लिखने में समस्या आती है। आरेख और चित्र बनाने में कोई दिक्कत नहीं थी । उन्होंने देखा कि ये विद्यार्थी भी कक्षा की गतिविधियों में बोलने और भाग लेने लगे हैं। ये विद्यार्थी चौकस थे और इनमें से एक विद्यार्थी ने मछलियों की साँस लेने वाली गतिविधि में एक महत्वपूर्ण अवलोकन किया था और उसे कक्षा के साथ साझा भी किया।

मोहित समझ गए कि विद्यार्थियों से सिर्फ पढ़वाने और लिखवाने तथा उनके लिखित कौशल का परीक्षण करने से उनके अधिगम के बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं मिल सकती। और यह भी कि विद्यार्थियों को अलग-अलग तरीकों से खुद को अभिव्यक्त करने का मौका देना चाहिए। उन्होंने इन बच्चों का विश्वास जीता और उनके साथ सम्बन्ध बनाए जिसके परिणामस्वरूप बच्चों के आत्मविश्वास में भी वृद्धि हुई। इसके अलावा मोहित का इन बच्चों को कक्षा से अलग न करके पूरी कक्षा को साथ में लेकर चलने का विचार यह दर्शाता

है कि उन्हें बच्चों के बारे में समझ है। मोहित विद्यार्थियों के आकलन सम्बन्धी अपने अभ्यास पर भी चिन्तन करते हैं।

(ग) तीन अंकीय संख्याओं के लिए स्थानीय मान की समझ सुनिश्चित करना : शकुन्तला चौरसिया एवं सऊद अहमद खान

यहाँ पर हमें गणित के शिक्षकों का संघर्ष और शिक्षकों पर काम का बोझ, इन दोनों के बारे में एक ईमानदार लेखा-जोखा मिलता है। शकुन्तला चौरसिया एवं सऊद अहमद खान ने मिलकर परियोजना पर काम करने का फैसला किया और वे प्राथमिक तथा प्रारम्भिक स्कूल के शिक्षकों के सामने आने वाली एक सामान्य समस्या का समाधान ढूँढ़ने में लग गए। समस्या यह थी कि जब कक्षा छह के विद्यार्थी विषय की मूल बातें ही नहीं जानते तो उन्हें उस कक्षा का विस्तृत पाठ्यक्रम कैसे पढ़ाया जाए? यहाँ पर कक्षा छह के विद्यार्थी स्थानीय मान के साथ जूझ रहे थे। इन दोनों ने श्यामपट्ट पर साधारण समस्या के एक सेट का प्रयोग किया ताकि बच्चे 'परीक्षा' के तनाव से दूर रहें। इस तरीके से ऐसे नौ विद्यार्थियों का पता लगाया जिन्हें दो और तीन अंकीय संख्याओं को क्रम से लगाने उनकी तुलना करने और लेखन में कठिनाई होती थी। इन दोनों ने ऐसी सामग्री का उपयोग करने का निर्णय लिया जिन्हें विद्यार्थियों ने बड़ी आसानी से कक्षा में ही बनाया था जैसे इकाई, दहाई और सैकड़े के रंगीन ब्लॉकों की सहायता से अवधारणा सिखाना। बुनियादी बातों से शुरू करके उन्होंने बच्चों का संख्यात्मक कौशल बढ़ाने में उनकी मदद की।

हमें यह वीडियो देखने में बहुत आनन्द आया। इसके कई कारण थे जैसे विद्यार्थियों की समझ की वास्तविक स्थिति का सामना करने में ईमानदारी, यह भावना कि पहले लागू की गई उपचारात्मक योजनाएँ परियोजना की समाप्ति पर भी जारी रहेंगी, इस बात को मुक्त रूप से स्वीकार करना कि दस्तावेजीकरण थकाऊ है और शिक्षकों के घरेलू समय में कटौती कर देता है। इन सभी के बावजूद, शिक्षकों ने इन बातों की खोज की : विद्यार्थियों का उन टी.एल.एम. के साथ लगाव जो उन्होंने बनाई थीं, जो विद्यार्थी जरा-सा पिछड़ा हुआ था वह गृहकार्य की माँग कर रहा था, वह योजना जिसके तहत विद्यार्थी अपने सवाल खुद ही बनाएँ, अलग-अलग विद्यार्थियों के लिए भिन्न प्रकार के अध्यापन के तनाव को कम करने के लिए दो शिक्षकों की मौजूदगी और परियोजना की माँगों को साझा करना - ये सारी बातें विश्वसनीय और शिक्षक के तनाव से सम्बन्धित हैं जिसके कारण उन्होंने समझने के माध्यम से प्राकृतिक मार्ग को अपनाया न कि सिर्फ विषयवस्तु को बता देने के संक्षिप्त मार्ग को।

(घ) बच्चे खुद करके सीखते हैं : नीरज

नीरज कक्षा पाँचवीं और छठी को विज्ञान पढ़ाते हैं। उन्होंने देखा कि विद्यार्थी कक्षा में प्रश्न ही नहीं पूछते और शिक्षक जो भी कहते हैं उस पर विश्वास कर लेते हैं। उन्हें लगा कि विद्यार्थियों को विज्ञान की प्रक्रिया से परिचित कराना चाहिए और प्रश्न पूछने में उनकी मदद करनी चाहिए।

उन्होंने विद्यार्थियों के साथ चर्चा शुरू की और प्रश्न पूछने में उनकी मदद की। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि वे अंकुरण को प्रभावित करने वाले कारकों का पता लगाएँ और यह भी पता करें कि क्या पौधे जड़ों के माध्यम से पानी अवशोषित करते हैं। विद्यार्थियों ने प्रयोग किए, अवलोकन किए और उन्हें रिकॉर्ड किया। साथ ही उन्होंने बहुत सारे प्रश्न पूछे और अंकुरण के बारे में पता लगाने के लिए परिस्थितियों में बदलाव भी किया जैसे धूप, पानी और मिट्टी की उपलब्धता।

इस प्रक्रिया के कारण बच्चों ने प्रश्न पूछने शुरू कर दिए हैं और साथ ही उनके जवाब ढूँढ़ने की कोशिश भी की। नीरज पहले सिद्धान्त सिखाते थे और बाद में गतिविधि कराते, लेकिन अब वे इस बात में विद्यार्थियों की सहायता करते हैं कि वे पूछताछ करें और खुद ही सिद्धान्त का पता लगाएँ। अब उन्होंने सीधे-सीधे जवाब देना भी बन्द कर दिया है। इस प्रक्रिया से उन्हें चिन्तन करने और यह समझने में मदद मिली कि बच्चे अपने आप ही सीखते हैं और अपने हाथों से कार्य करके सीखते हैं। क्रियात्मक शोध करने के दौरान उन्होंने विद्यार्थियों से सीखा और विज्ञान की विभिन्न परिघटनाओं के बारे में भी सोचने लगे।

(ङ) हिन्दी वर्णमाला और शब्दों को पढ़ने-लिखने में क्षमता बढ़ाना : नरेन्द्र जोशी एवं सहाबुद्दीन अंसारी

पॉल लॉकहार्ट गणित शिक्षण के बारे में अपने प्रसिद्ध अंश लॉकहार्ट्स लेमेंट में कहते हैं, ''और मैंने स्कूल में गणितीय आलोचना की कमी का कभी उल्लेख नहीं किया। विद्यार्थियों को यह भेद कभी नहीं बताया जाता कि किसी भी साहित्य की तरह गणित को भी मनुष्य के द्वारा अपने मनोरंजन के लिए बनाया गया है, कि गणित के कार्य समीक्षात्मक मूल्यांकन के अधीन हैं, कि कोई भी व्यक्ति गणित का स्वाद ले सकता है और उसे विकसित कर सकता है।'' हालाँकि भाषा शिक्षण की स्थिति गणित की तरह तो नहीं है लेकिन नरेन्द्र जोशी और सहाबुद्दीन अंसारी ने क्रियात्मक शोध के लिए हिन्दी में पढ़ने का कौशल सिखाने के लिए जिस सम्पूर्ण भाषा उपागम को अपनाया, उससे विद्यार्थियों को निश्चित रूप से भाषा का स्वाद विकसित करने में सहायता मिली। इस वीडियो में हम देखते हैं कि शिक्षक भाषा के अध्ययन को विद्यार्थियों के वास्तविक जीवन के अनुभवों के साथ जोड़ रहे हैं और विद्यार्थी जिस भाषा को पढ़ना सीख रहे हैं, उस भाषा के अक्षरों के स्थान पर शब्दों का उपयोग करके ये शिक्षक उस भाषा का 'अनुभव' करने में विद्यार्थियों की मदद कर रहे हैं। इन शिक्षकों

ने एक आम समस्या का सामना किया : उन विद्यार्थियों को हिन्दी की लिपि सिखाना जो घर पर हिन्दी नहीं बोलते थे। इसके लिए उन्होंने कहानियों का सहारा लिया - चार्ट पर एक संक्षिप्त, रोचक कथा लिखना और उसे पाठ पढ़ाने के कुछ दिन पहले दीवार पर लगाना, फिर उसे इशारों और हाव-भाव के साथ विद्यार्थियों को पढ़कर सुनाना, प्रत्येक विद्यार्थी को स्वयं पढ़ने के लिए कहानी की प्रतिलिपि देना, विद्यार्थियों को कागज के एक टुकड़े पर कहानी के वाक्य लिखकर देना और फिर उन्हें कहानी के क्रमानुसार व्यवस्थित करने को कहना इत्यादि। इसके अलावा रोल प्ले, खेल और सीखने की अन्य गतिविधियाँ भी करवाई गईं। करीब तीन महीने में अधिकांश विद्यार्थियों की पठन क्षमता में उल्लेखनीय सुधार दिखाई दिया।

इस वीडियो क्लिप को अन्य क्लिपों की तरह बहुत अधिक सम्पादित नहीं किया गया है। बातचीत के दौरान शिक्षक थोड़ा-सा भटके हुए नजर आते हैं लेकिन उनकी बातों से यह पता चलता है कि शिक्षक अपने मार्ग में आने वाले अवरोधों को पार करने के लिए किस तरह के प्रयास करते हैं। ये अवरोध हैं - विद्यार्थियों की अनियमित उपस्थिति, घर के वातावरण से कम समर्थन मिलना, कक्षा के स्तर तक पहुँचने की जरूरत आदि। यह बात स्पष्ट थी कि शिक्षक जिन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेते हैं उनसे वे अपने द्वारा अपनाई गई योजनाओं की अवधारणा बनाने, समझने और विकसित करने के बारे में बहुत कुछ सीखते हैं। यह अपने आप में उत्साहजनक है। कई शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेते हैं -लेकिन ऐसा कितनी बार होता है कि उन्हें उन कार्यक्रमों से कुछ ऐसा सीखने को मिला हो जिसे वे अपनी कक्षा में लागू कर सकें? इतना ही नहीं, इस वीडियो को देखने वाले शिक्षक, धीमी और अक्सर प्रतिगामी विद्यार्थियों की गति से विकसित होने वाली योजना की भावना को समझते भी हैं और उसके साथ तादात्म्य भी स्थापित कर पाते हैं। ये वीडियो वास्तविक हैं और सफलता की कहानियों की तुलना में यही वह बात है जो शिक्षकों के लिए जरूरी है। शिक्षक ने यह भावना व्यक्त की कि हालाँकि परियोजना समाप्त हो गई है लेकिन काम समाप्त नहीं हुआ है। यह बात भावनात्मक प्रतिक्रिया पैदा करेगी और निश्चित रूप से एक ऐसे सहयोगी समूह की आवश्यकता पर बल देगी जो विचारों और अभिनव योजनाओं के साथ शिक्षक की सहायता करे।

(च) प्रभावी ढंग से भाषा सिखाने के लिए दो दृष्टिकोणों को सम्मिलित करना : मदन मोहन जोशी

मदन मोहन जोशी पहले पर्यावरण अध्ययन का अध्यापन करते थे लेकिन फिर उन्होंने चौथी कक्षा को हिन्दी पढ़ाना शुरू किया जो एक प्रशंसनीय बात है। उन्होंने देखा कि चौथी कक्षा के पाँच विद्यार्थी हिन्दी में न तो पढ़-लिख पाते हैं और न ही शब्द पहचान पाते हैं और इसलिए वे कविता या कहानी का आनन्द नहीं ले पाते।

उन्होंने इन बच्चों को पढ़ाने के लिए सम्पूर्ण भाषा और पारम्परिक दृष्टिकोण का मिश्रण करने की कोशिश की। उन्होंने एक कहानी ली, उनसे एक शब्द पढ़वाया और फिर अक्षरों की ओर बढ़े। उन्होंने बच्चों को उल्टे तरीके से कहानी पढ़ने की चुनौती दी ताकि वे यह जाँच सकें कि विद्यार्थी वाकई पढ़ सकते हैं।

पारम्परिक और सम्पूर्ण भाषा के दृष्टिकोण के मिश्रण को समझने के लिए शिक्षक ने जिन योजनाओं का उपयोग किया, उनके और उदाहरण दिए जा सकते थे। इस वीडियो में यह अधिक स्पष्ट नहीं है। शिक्षक का यह दावा भी संदिग्ध है कि ये पाँच विद्यार्थी कुछ महीनों में लगभग सभी शब्द पढ़ पाए। उन्होंने यह दावा भी किया कि चूँकि विद्यार्थी पढ़ सकते थे इसलिए वे कविता और कहानियों का आनन्द ले पाए। मदन ने इन पाँच विद्यार्थियों का अलग समूह बनाकर उसमें उनसे काम करवाया और उन्हें दो समूहों को सम्भालने में कठिनाई हो रही थी। शिक्षक की पृष्ठभूमि, पर्यावरण अध्ययन पढ़ाने के बारे में उनका चिन्तन, फिर हिन्दी पढ़ाना और यह परिवर्तन उन्हें कैसा लगा - इन सबके बारे में कुछ और विवरण देना उपयोगी साबित होता। इस वीडियो के सम्पादन में और कसावट की जरूरत थी और इसकी संरचना बेहतर हो सकती थी । शिक्षक के दस्तावेजीकरण के प्रयास बहुत स्पष्ट हैं।

क्रियात्मक शोध और चिन्तनशील अभ्यास

शिक्षण एक चिन्तनशील अभ्यास है, शिक्षक निरन्तर अपनी योजनाओं का मूल्यांकन करते हैं और अपने अभ्यास की बेहतरी के लिए योजनाओं का विकास करते हैं या अपनी कार्य प्रणाली को बदलते हैं। अनुभव पर चिन्तन करने और शिक्षण अभ्यास के सुधार के लिए योजना बनाने को 'चिन्तनशील शिक्षक मॉडल' (मैकमोहन 1999) के रूप में जाना जाता है। इस परियोजना में भाग लेने वाले शिक्षक भी यह मानते हैं कि उनके कार्य में चिन्तन व क्रियाएँ करना शामिल हैं।

इन वीडियो को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि क्रियात्मक शोध की इस प्रक्रिया ने इन शिक्षकों को अपनी कक्षाओं, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया, बच्चे कैसे सीखते हैं, वे योजनाएँ जिनसे बच्चों को सीखने में मदद मिल सकती है, शिक्षार्थी किन समस्याओं का सामना करते हैं इत्यादि बातों के बारे में सोचने में सहायता की है। इससे उन्हें अपनी धारणाओं पर चिन्तन करने में मदद मिली है। इन शिक्षकों ने अधिगम के साथ जुड़ने में विद्यार्थियों की सहायता की है। उनके चेहरों पर मुस्कुराहट है और प्रभावी तरीके से कुछ करने की खुशी है क्योंकि उन्होंने बच्चों के अधिगम में कुछ बदलाव देखा है।

इससे उन्हें अन्य शिक्षकों व प्रधानाध्यापक के साथ मिलकर काम करने और उनके साथ अपनी समस्याओं तथा योजनाओं पर चर्चा करने में भी सहायता मिली है । दस्तावेजीकरण थकाऊ तो था लेकिन उसकी वजह से वे अपनी इस यात्रा पर चिन्तन कर पाए और उसे समझ सके।

ये वीडियो और विवरण शिक्षकों और शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए उपयोगी संसाधन हैं क्योंकि भारतीय सन्दर्भ में ऐसे उदाहरण नहीं के बराबर हैं। क्रियात्मक शोध की प्रक्रिया को समझने के लिए इनका प्रयोग कार्यशालाओं में किया जा सकता है और स्व-अधिगम के लिए भी ये उपयोगी हैं। ये उदाहरण अन्य शिक्षकों को चिन्तन करने और अपनी कक्षा में ऐसी योजनाओं को उपयोग में लाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

References

Tim McMahon (1999), Is reflective practice synonymous with action research? Educational Action Research, 7:1, 163-169, DOI: 10.1080/09650799900200080

स्नेहा टाइटस स्कूल ऑफ कंटीन्यूइंग एजुकेशन, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। उनकी उत्कट इच्छा है कि वे गणित की सुन्दरता, तर्क और प्रासंगिकता को साझा करें। हाईस्कूल गणित की पत्रिका 'एट राइट एंगल्स' की सह-सम्पादिका होने के साथ-साथ वे ग्रामीण तथा शहरी स्कूलों के शिक्षकों की सलाहकार भी हैं। स्नेहा कार्यशालाओं का संचालन करती हैं जिनमें वे समस्या सुलझाने के माध्यम से कौशल के विकास पर और गणित शिक्षण में प्रयुक्त शैक्षणिक योजनाओं पर ध्यान देती हैं। उनसे sneha.titus@ azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

इन्दुमती एस. इस लेख के लिखे जाने तक वे स्कूल ऑफ कंटीन्यूइंग एजुकेशन, अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी के साथ सम्बद्ध थीं। वे विज्ञान की शिक्षा और महिला व विज्ञान तथा शिक्षक पेशेवर विकास के क्षेत्र में अत्यधिक रुचि रखती हैं। वे शिक्षा में पीएच.डी. कर रही हैं और विज्ञान की कक्षाओं में लड़कियों के अनुभवों को समझने के कार्य में जुटी हुई हैं। **अनुवाद :** नलिनी रावल